श्रम विभाग

दिनांक 26 फरवरी, 1987

सं० श्रो० वि०/एफ०डी०/ 15-87/ 7585.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इलैंक्ट्रो मास्टर इण्डस्ट्रोज, प्लाट नं० 384, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रीमती धर्मवती, मार्फत फरीदाबाद इंजिनियरिंग मजदूर यूनियन, जी-162, इन्दरा कालौनी, सैक्टर 7, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लियें, ग्रव, ग्रीचागिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिविस्वना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्रोमती धर्मवतो को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठोक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

दिनांक 3 मार्च, 1987

सं श्री विव /एफ बी । गुड़गांव / 137-86 | 9410 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डी गढ़, (2) महा प्रवन्धक, सैण्ट्रल बाढ़ी बिल्डिंग वर्गशाप, हरियाणा रोड़वेज, गुड़गांव, के श्रीमक श्री विजय वुमार, पुत्र श्री पन्ना लाल, निवासी गाव खिजारी, डा० डुंगरवास, जिला महेन्द्रगढ़, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री विजय कुमार, ग्रसिस्टॅन्ट इलैक्ट्रिशियन, की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि वि एफ बो । 20-87/9418 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वाई एम सो. ए इन्स्टी च्यूट आफ इन्जीनियरिंग, जाकिर नगर, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सुमेर सिंह, पुत्र श्री राम सरुप, गांव व डा॰ पाली रजापुर, जिला अलीगढ़ (यू॰ पी॰) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ब्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रब धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री सुमेर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?